© 2021 JETIR July 2021, Volume 8, Issue 7 www.jetir.org (ISSN-2349-5162)

प्रकृति के सजग चितेरे : कवि सुमित्रानन्दन पंत

Dr Umesh Kumar Singh
Associate Professor,
Department of Hindi and Comparative Literature,
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya,
Gandhi Hills, Wardha-442001 (Maharashtra) Bharat

सारांश : सुमित्रानन्दन पंत छायावादी काव्यधारा के प्रमुख चार स्तंभों में प्रमुख जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एवं महादेवी वर्मा आदि में से एक माने जाते हैं। उनके काव्य में प्रकृति का अद्भुत् चित्रण हुआ है। इसका श्रेय उन्होंने प्रकृति के निरीक्षण एवं अपनी जन्मभूमि प्रदेश कुमांचल को माना है। उन्होंने बताया है कि मनोरम एवं हरि-भरी प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण वातावरण का प्रभाव मन पर पडना स्वभाविक होता है। यह वातावरण मनुष्य के व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित करता है। सुमित्रानन्दन पंत की प्रकृति जड नहीं अपितु चेतन होने के साथ- साथ मानवीय भावना के सरोकारों से ओत-प्रोत प्रतीत होती है। इस शोधपत्र में उनकी प्रकृति सम्बन्धी कविताओं के प्रमाणों के आधार पर सिद्ध करना है कि उनका प्रकृति चित्रण कितना सजग, अभूतपूर्व एवं अनौखा है।

प्रमुख शब्द / Key words : मानवीयकरण – humanization, शीतल पवन – child wind, पलनों में – in the cradles, मृदु – tender, बेसुध – insensitive, मांसल- Flashy, विस्मृत- Forgetfulness, सुनागरिक – Good citizen, प्रफुल्लित-Cheerful.

शोध प्रविधि / Research Methodology : प्रस्तुत शोधपत्र को लिखने के लिए तथा शोध को अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए आलोचनात्मक एवं समीक्षात्मक शोध प्रविधिओं का प्रयोग किया गया है।

सुमित्रानन्दन पंत छायावादी काव्यधारा के अनूठे कवि हैं। इन्हें छायावाद का चौथा स्तम्भ माना जाता है। आपका जन्म 20 मई 1900 उत्तर भारत में कसौनी, अल्मोडा में हुआ था। कसौनी जनपद प्रकृति की सुंदरता के बीच बसा हुआ है। पंत जी के जन्म के छः घंटे बाद ही इनकी माता इस दुनियाँ को छोडकर स्वर्ग सिधार गई थीं। इस घटना का प्रभाव इनके चिर कुमार जीवन पर बहुत गहरा पडा। इसके बाद इनका पालन पोषण इनकी दादी जी ने किया था। छायावादी काव्य की विशेषता यह रही है। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता इस धारा के कवियों ने स्वछन्द कल्पना के लिए प्रकृति का सहारा लिया है। पंत के काव्य में प्रकृति के लिए प्रेम और कल्पना की ऊंची उडान है।

छायावाद के चार कवि प्रमुख माने जाते हैं। जिनमें जय शंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला एवं महादेवी वर्मा का परिगणन किया गया है। पंत ने स्वयं लिखा है – कविता की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति के निरीक्षण से प्राप्त हुई है। इसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कुमांचल (अल्मौडा, वर्तमान उतरांचल में) प्रदेश को है। कवि जीवन से पहले भी मुझे याद है कि मैं घंटो बैठकर प्रकृति के दृश्यों को एकटक देखा करता था। ऐसा प्रतीत होत है कि मां की ममता से रहित उनके जीवन में मानो प्रकृति ही उनकी मां हो। उत्तर प्रदेश के अल्मोडा के पर्वतीय अंचल की गोद में पले बढे और बड़े हुए। पंत ने स्वयं स्वीकार किया है कि प्रकृति के मनोरम वातावरण मे उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पडा।

सुमित्रानन्दन पंत की प्रमुख रचनाओं का क्रम इस प्रकार है: 1.वीणा-1919, 2. ग्रन्थि -1920, 3. पल्लव – 1926, 4. गुंजन – 1932, 5. युगान्त – 1937, 6. युगवाणी- 1948, 7. ग्राम्या – 1940, 8. स्वर्ण किरण – 1947, 9. स्वर्ण धूलि – 1947, 10. उत्तरा – 1949, 11. युग पथ – 1949, 12. चिदम्बरा – 1958, 13. कला और बूढा चांद – 1959 14. लोकायतन – 1964,

© 2021 JETIR July 2021, Volume 8, Issue 7 www.jetir.org (ISSN-2349-5162)

15. गीतहंस- 1969, 16. कहानियाँ पांच - 1938, 17. उपन्यास हार- 1960, 18. आत्मकथामक संस्मरण - साठ वर्ष : एक रेखांकन - 1963. तथा सुमित्रानन्दन पंत को प्राप्त पुरस्कारों में 1 पद्मभूषण - 1961, 2 ज्ञानपीठ - 1968, 3 कलाओं और बूढा चांद के लिए - साहित्य अकादमी पुरस्कार 4 लोकायत एवं सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, 4 चिदम्बरा पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार। कौसानी चाय बागान के व्यवस्थापक के परिवार में जन्में सुमित्रानन्दन पंत की मृत्यु 28 दिसम्बर 1977 को इलाहबाद उत्तर प्रदेश में हुई।

सुमित्रानन्दन पंत का प्रकृति के साथ चित्रण अभूतपूर्व दृष्टिगोचर होता है। झरना, बर्फ़, पुष्प, लता, भंवरा, गुंजन, उषा किरण, शीतल पवन, तारों की चुनरी ओढे गंगन से उतरती हुई सन्ध्या इत्यादि सभी सहज रूप से काव्य के उत्पादक बने हैं।

मानव कविता में कवि पंत ने प्रकृति के सौंदर्य का दर्शन समग्र जीवन के रूप में करते हैं।

सुन्दर है विहग सुमन सुन्दर ।
मानव ! तुम सबसे सुन्दरतम ॥1

प्रकृति का मानवीकरण छायावाद में विशेष कहें तो अनुचित नहीं होगा। यह मानवीकरण भी नारी के रूप में हुआ है। प्रकृति के कवि प्रकृति के लिए मां, सखि, प्रेयसी जैसी उपमाओं से कहकर कविताओं की रचना करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

"छोड द्रुमों की मृदु छाया
तोड प्रकृति से भी माया
वाले । तेरे बाल-जाल में
कैसे उलझा हूँ लोचन
भूल अभी से इस जग को"॥2

उनकी कविताओं में प्रकृति साकार उठी सी प्रतीत होने लगती है। जैसे :-

"सिखा दो ना हे मधुप कुमार
मुझे भी अपने मीठे गान ।
कुसुम के चुने कटोरों से
करा दो ना कुछ कुछ मधुपान"॥3

सुमित्रानंदन पंत के स्वच्छन्द कविता संग्रह में छेनुए कविता के अंर्तमन नदी का वर्णन अद्वितीय है। नदी की तीव्र गति को देखकर मानव मन मचल और आनंद विभोर हो उठा सा प्रतीत होता है।

"ओ रंभाती नदियों / बेसुध कहाँ भागी जाती हो ।
वंशी-रव / तुम्हारे ही भीतर है ओ फेन-गुच्छ ।
लहरों की पूछ उठाए / दौडती नदियाँ ॥
इस पार उस पार भी देखो / जहाँ फूलों के कूल
सुनहले धान के खेत हैं / कल-कल, छल-छल
अपनी ही विरह-व्यथा / प्रीति-कथा कहते मत चली जाओ" ॥4

कवि नदियों को गायों के रूप में चित्रित करता है और साथ ही उन्हें अंधी होकर प्रवाहित न होने को कहता है तथा धान और फूल का सौंदर्य भी देखने को कहता है। निरु उद्देश्य भागते रहना अर्थहीन है।

2 / 26

© 2021 JETIR July 2021, Volume 8, Issue 7 www.jetir.org (ISSN-2349-5162)

प्रस्तुत बादल कविता की पंक्तियाँ पंत जी की सौन्दर्य को निहारने की कला पर्याप्त सूक्षमता रूप में स्पस्ट और प्रकट हुई है उन्होने सौंदर्य के मनोहारी रूप स्थान स्थान प्रकट हुये हैं। उनकी सरलता हृदयंगम करने वाली है। इस कविता में मात्र नदी की ही नहीं, उमंग भर रही है। इसमें अनुभूति की मीठी तीव्रता है।

"जलशयों में कमल दलों सा
हमें खिलाता नित दिनकर
पर बालक सा वायु सकल दल
बिखरा देता चुभ सत्वर" ॥
"लघु लहरों के चल पलनों में
हमें भुलाता जब सागर ।
वहीं चील सा झपट बाँह गह
हमको ले जाता ऊपर"॥ 5

सुमित्रानन्दन पंत की कविताओं में सर्वाधिक प्रकृति वर्णन ही परिलक्षित होता है। इनके प्रकृति वर्णन में भिन्नता होते हुए भी कोयल और पपीहे की तान ही सुनाई देती है। पंत की प्रकृति जड नहीं बल्कि चेतन है। मानवीय भावनाओं से सराबोर हैं।

सुमित्रानन्दन पंत ने प्रकृति के अनेक रूप अपनी कविताओं में प्रस्तुत किए हैं। उतने अन्यत्र प्रतीत नहीं होते हैं। जैसे :

"चंचल पग दीप -शिखा के धर गृह मग वन में आया बंसा
सुलग हागुन का सूनापन , सौन्दर्य शिखाओं में अनन्त॥
पल्लव पल्लव में नवल रुधिर पत्रों में मांसल रंग खिला।
आया पीली-पीली लौ से पुष्पों के चित्रित दीप जला॥ 6

कवि के लिए प्रकृति उत्सव स्थल नहीं बल्कि उसके लिए यह अध्ययन शाला है। वह प्रकृति के सौन्दर्य से ऊर्जा और रस पाता है।

"हे सखि ! इस पावन अंचल से
मुझको भी निज मुख ढूढकर
अपनी विस्मृत सुखद गोद में
सोने दो सुख से क्षणभर"॥7

सुमित्रानंदन पंत पृकृति की उपेक्षा न करते हुए उनके सौन्दर्य में नए अर्थ और सार्थकता खोजते हैं। प्रकृति को निहारने का अर्थ केवल कुसुम, मारुत, खग, कुल को निहारने तक ह सीमित ही नहीं है। अपितु वसुंधरा के हर छोटे बड़े जीव को दृष्टि में लाना है। कवि दृष्टि तितली के चटक रंग के साथ धूधली वाली चींटी पर भी जाती है। सही मायने में यह उनकी विशेषता कही जा सकती है। कवि चींटी की करी क्षमता पर प्रकाश डालते हुए कहता है कि चींटी निरंतर अपने कार्य में तन्मय अर्थात लगी रहही है। उसका भी अपना घर संसार होता है।

"चींटी है प्राणी सामाजिक,
वह श्रम जीवी, वह सुनागरिक" ॥
++++++++++++++++++
विचरण करती श्रम में तन्मय।
वह जीवन की चिनगी अक्षय। 8

3 / 26

कवि ने अपनी कलख कविता में वास्तविक एवं सारगर्भित दृश्य चित्रित किया है। वह बाँसों के समूह/ झुंड में अर्थात झुरमुट में चहचहाते पक्षियों की आवाजों और भारी पैरों से उदास मन लिए अपने घरों को लौटते श्रमजीवियों की विरोधपूर्ण स्थिति को दर्शाते हुएकवि ने संध्या का अत्यंत व्यंजक चित्र प्रस्तुत किया है।

बांसो का झुरमुट।
संध्या का झुरमुट।
हैं चहक रही छिड़ियाँ
टीवी टी - टुट टुट
++++++++++
कुछ श्रमजीवी, धर डगमग डग
मानती है जीवन ! भारी पग। 9

सुमित्रानंदन पंत अपनी रचना ग्राम्या में ग्राम जीवन के अद्भुत रंगचित्र प्रतिपादित किए हैं जिससे प्रकृति के भी अनेक चित्र सम्मिलित हैं जिसमें ग्राम प्रकृति के अनेक चित्र शामिल किए गए हैं। पंत जी की रचना ग्राम चित्र कविता में कहते हैं वे अपनी रचना ग्राम चित्र जैसे –

"यह रवि-शशि का लोक-जहाँ हँसते हँसते समूह में उडु-गण
जहाँ चमकते विहग बदलते क्षण-क्षण विद्युत-प्रभ बन ।
यहाँ वनस्पति रहते रहती खेतों में हरियाली,
यहाँ धूल है, यहां ओंस है, कोकिला आम की डाली ।
ये रहते यहाँ और नीला नभ बोयी धरती ।
सूरज का चौडा प्रकाश ज्योत्सना चुपचाप विचरती ।
प्रकृति धाम यह तृण-तृण कण-कण जहाँ प्रफुल्लित जीवित ।
यहाँ अकेला मानव ही रे चिर विषण्ण जीवनमृत"॥ 10

निष्कर्ष (Conclusion) :- आज साहित्य में छायावादी दौर का भले ही अवसान हो चुका है किन्तु उसके समृद्धशाली और गौरवशाली दौर को कभी नहीं भुलाया और झुठलाया जा सकता है। इस प्रकार जब- जब छायावादी साहित्य की चर्चा होगी, तब-तब प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा और सुमित्रानंदन पंत को याद किया जाता रहेगा। ये चारों छायावादी साहित्य के आधार स्तम्भ और उस युग के विशेष कवि हैं। जब हिंदी कविता चलने का अभ्यास या इस प्रकार कहें कि चलना सीख रही थी। सुमित्रानंदन पंत ने हिंदी कविता को, न केवल सौम्य, सुकुमार और शासक्त भाषा के रूप को प्रतिष्ठित करने के साथ-साथ हिंदी साहित्य के लिए एक नई शैली भी प्रदान की है। उन्होने आजीवन अविवाहित रहकर साहित्य की सेवा की है।

कवि सुमित्रानंदन पंत के जीवन की पीड़ा के रिस्ते का प्रारम्भ उनके जन्म के कुछ घंटे बाद उनकी माँ के असमय मृत्यु के रूप में होता है। इनका लालन पालन इनकी दादी माँ के द्वारा किया गया था। माँ के अभाव ने बालक पंत को पिता के कुछ अधिक निकट ला दिया था। उनके पिता चाय के बागानों में प्रबन्धक एवं लकड़ी का व्यवसाय भी किया करते थे।

सुमित्रानंदन पंत की प्रकृति की निकटता के कारण ही उनकी रचनाओं में प्रकृति के सौन्दर्य का अनुपम वर्णन परिलक्षित होता है। यही वह प्रमुख कारण है कि उन्हें "प्रकृति का सुकुमार कवि" कहा जाता है। यह सर्वविदित है कि सुमित्रानंदन पंत छायावाद के प्रमुख स्तम्भ के रूप में जाने जाते हैं। छायावादी कवियों की कल्पनाशीलता देखते ही बनती है। इस संबंध में पंत जी कहा करते थे कि मुझे प्रकृति का अति निकट सानिध्य मिला है। इसकारण से प्रकृति को घंटों बैठकर निहारा करते थे। यही वह प्रमुख कारण है जिससे प्रक्रति के प्रति उनकी कविताओं में विशेष अनुराग स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ता है तथा उनकी कविताओं में प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ। वास्तव में कविता हमारे मनोभावों के ही शब्द चित्र होते हैं। उनकी चयनित कविताओं के

4 / 26

© 2021 JETIR July 2021, Volume 8, Issue 7 www.jetir.org (ISSN-2349-5162)

अंशों जैसे मोह मधुकरी, धेनुए, बादल, छाया एवं आँसू कविताओं के माध्यम से पंत जी को प्रकृति के सजग चितेरे कवि के रूप में सिद्ध करने का एक लघु प्रयास मात्र है।

संदर्भग्रंथ (Bibliography) :-

1. पंत, सुमित्रानंदन, आधुनिक कवि-2 साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 12 सम्मेलन मार्ग , इलाहाबाद मानव कविता, पृष्ठ सं. 33
2. पंत, सुमित्रानंदन पंत (2008) नौवाँ संस्करण1993 'पल्लव' राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002, पृष्ठ सं. 84
3. पंत, सुमित्रानंदन पंत (2008) नौवाँ संस्करण1993 'पल्लव' राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002, पृष्ठ सं. 76
4. वाजपेयी अशोक सं 2008 पंत, सुमित्रानंदन-'स्वच्छंद', राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि, 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002 पृष्ठ सं. 55
5. पंत, सुमित्रानंदन पल्लव, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि, 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002 पृष्ठ सं. 55
6. पंत, सुमित्रानंदन पंत (2008) नौवाँ संस्करण1993 युगपथ, राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002, पृष्ठ सं. 13-14
7. वाजपेयी अशोक सं (2008) पंत, सुमित्रानंदन-स्वच्छंद, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि, 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002 पृष्ठ सं. 57
8. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली, खंड 2, (वर्ष 2004) राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002, पृष्ठ सं. 84-85
9. पंत, सुमित्रानंदन पंत (1998) युग पथ, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि, 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002 पृष्ठ सं. 20
10. पंत, सुमित्रानंदन पंत, ग्राम्या (2001) लोक भारती प्रकाशन महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-1 कविता ग्राम चित्र, पृष्ठ सं.39

5 / 26

नवम्बर 2021

ISSN – 2349-3100

ISSN – 2349-3100

Peer Reviewed

एकत्रिंशोऽङ्कः NOV 2021

Refereed Journal

अन्ताराष्ट्रियमूल्यांकितत्रैमासिकसन्दर्भितशोधपत्रिका

वेदज्योतिष्मती

Vedajyotishmati

संरक्षकाः

प्रो. रामचन्द्रझाः,

प्रो. देवेन्द्रमिश्रः, प्रो. शिवाकान्तझाः

प्रधानसम्पादकः

प्रो. हंसधरझाः

सम्पादकः

डॉ. आशीषकुमारचौधरी

प्रकाशकः

संस्कृत-अनुसंधान-संस्थानम्, के. एम. टैंक लहेरियासरायः, दरभंगा

ISSN – 2349-3100

सम्पादकमण्डलम्

1 प्रो.बोधकुमारझाः
आचार्य, व्याकरण-विभाग,
क. जे. सोमैया-संस्कृतविद्यापीठ, मुम्बई।

2 प्रो. हंसधरझाः
ज्योतिष विभाग ,आचार्य,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान , भोपाल परिसर, भोपाल।

3 प्रो. प्रमोदवर्धनकौण्डिल्यायनः,
विभागाध्यक्ष, मीमांसा दर्शन विभाग नेपाल,
नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय, काठमाण्डु, नेपाल।

4 जूही जेनोजे
आचार्या,दर्शन विभाग,
कोरिया विश्वविद्यालय, सीओल, कोरिया।

5 डॉ. प्रवेशसक्सेना
पूर्व आचार्या,संस्कृत विभाग,
जाँकिर हुसैन महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय।

6 डॉ. धनञ्जयमणित्रिपाठी
आचार्य ,संस्कृत विभाग,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली।

7 डॉ. दिलीपकुमारझाः
विभागाध्यक्ष-धर्मशास्त्र विभाग
कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा।

8 डॉ. राजीवमिश्रः
आचार्य ,संस्कृत विभाग,
मोदी विश्वविद्यालय, राजस्थान।

9 टेल्टो डेल्टेज
आचार्य दर्शन एवं संस्कृति विभाग,
हेल्डमार्ग विश्वविद्यालय,हेल्डनवर्ग, जर्मनी।

10 प्रो. विद्यानन्द झाः
पूर्व.प्राचार्य,
भोपाल परिसर, भोपाल।

पुनर्वीक्षणमण्डलम्

1. **आचार्या प्रवेश सक्सेना**
पूर्व आचार्या ,जाँकिर हुसैन महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली।
2. **आचार्य नीलाम्बर चौधरी**
आचार्य रामभगत राजीवगाँधी महाविद्यालय दरभंगा।

सहसंपादक

1.डा. अनिल कुमार, रा. सं. सं भोपाल परिसर, भोपाल।
2.आस्तीक द्विवेदी, रा. सं. सं भोपाल परिसर, भोपाल

प्रबंधक संपादक
1. श्री पंकज ठाकुर

परामर्शदातृसंपादकः
1. डॉ. रंजय कुमार सिंह
रा. सं. संस्थान, मुम्बई परिसर।

सहसंपादिका
1.डॉ गीता दूबे ,रा. सं. संस्थान, मुम्बई।
संगणक सहयोग- रोहित पचौरी

वर्षम्-NOV 2021

@copy right – Sanskrit Anusandan Sansthan

Email – rsas.kothram@gmail.com, vjvv.rs@gmail.com,
Ph No. 06272-224671, 09619269812, 07506137027 मूल्य-300/

पत्रिका में प्रकाशित लेखों से प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। विवाद का समाधान दरभंगा न्यायालय से ही स्वीकार्य है ।लेखों को परिवर्तित, स्वीकृत एवं अस्वीकृत करने का पूरा अधिकार प्रकाशक को होगा ।A Multilanguage Educational Sanskrit Research Journal Published by the Sanskrit Anusandhan Sansthan, Darbhanga
From letter no-671/2014-15 Place on Rashtriya Sanskrit Anusandhan Sansthan will kown as the Sanskrit Anusandhan Sansthan, Darbhanga

वेदज्योतिष्मती

ISSN – 2349-3100

सम्पादकीयम्

वेदोऽ खलो धर्ममूल मति ना वदितं वज्ञैः। स च वेदो ज्ञान वज्ञानमयः। नि खलानि पुराणानि, शास्त्रा ण, उपनिषदादीनि अनुगच्छन्ति वेदमेव। अर्थाच्छास्त्रोपशास्त्रादिमाध्यमेन वधीयते संरक्षणं खलु भारतभूमौ वेद वद्याया एव। तत्र वेद वद्यायाः प्रचारे संरक्षणे च यथा केन्द्रीयसंस्कृत वश्व वद्यालय- (पूर्वतन-राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान) सदृशा महत्यः संस्थाः सन्ति संलग्नास्तथैव नैके लघ्व्योऽ प सन्ति संस्थाः संलग्नाः कार्यैऽस्मिन्। तत्र लघुसंस्थासु अन्यतमास्ति 'संस्कृत-अनुसंधान-संस्थानम्' इति नाम्नी संस्था यया बहुभ्यो वर्षेभ्योऽनवरतं प्रकाश्यते वेदज्योतिष्मतीति नाम्नी अन्ताराष्ट्रीया त्रैमा सकी शोधपत्रिकेतीति अमन्दानन्दसन्दोहावसरः। अत्र वेद वद्यासम्बद्धै र्व वधज्ञान वज्ञानमयैर्लेखैः वद्यमानत्वात् पत्रिकाया अस्या अनल्पमस्ति समादरः संस्कृतक्षेत्रे इत्य प ना वदितं लोके। तत्रा प प्रतित्रिमासं प्राकाश्यमेति पत्रिकाया अस्या अङ्कः इति वै शष्ट्यमस्या।

तत्रैषमः पत्रिकाया एकत्रिंशोऽप्यङ्को देशस्य व वधकोणेभ्यः समागतै र्वद्वल्लेखैर्मण्डितोऽस्तीति परमं सुखास्पदम्।

एतदर्थं सर्वप्रथमं वभ र्म कार्तज्यं तेषां वदुषां लेखकाणां प्रति यैः स्वकीयशास्त्रीयज्ञान वज्ञानमयैर्लेखैरङ्कस्यास्य गरिमां व र्धतवन्तः। ततः परं साशीर्वादं प्रयच्छा म साधुवादं पत्रिकाया अस्या युवसम्पादकाय श्रीचौधरीमहोदयाय येन प्रतित्रिमासं पत्रिकाया अस्या वधीयते प्रकाशनम्। ततः परं तेभ्यः सर्वेभ्यः सज्जनेभ्योऽ प वतनो म साधुवादान् येषां पत्रिकाया अस्याः प्रकाशने सहयोगः प्राप्तः। अन्ते कामये भगवन्तं भूतभावनं महाकालम् –

वेदज्ज्योतिष्मतीत्यस्याः पत्रिकायाः सतां प्रयः।

एकत्रिंशोऽ प लोके स्यादङ्कश्चित्तानुरञ्चकः।।

गुणैकपक्षपतिनां सहृदयानां वदुषां शुभाशंसनमपेक्षाणः –

प्रधानसम्पादकः

(प्रो. हंसधरझाः)

ISSN – 2349-3100

विषयसूची पृष्ठसंख्या

सम्पादकीयम्
प्रो.हंसधरझाः 3

मॉरीशस में गंगा तालाब तीर्थ : एक सांस्कृतिक विरासत
Dr. Umesh Kumar Singh 5

मानव व्यवहारस्य जीवने निर्धारिक मूल्यानां पर्यावरणशिक्षायाः आवश्यकता महत्त्वञ्च
डॉ. कौशल किशोर बिजल्वाण 9

राजेन्द्रकर्णपूरकाव्य में उल्लिखित पौराणिक आख्यानों का समिक्षात्मक अध्ययन
संदीप कुमार यादव 14

पृथिव्याः उत्पत्तिर्विकासश्च
राहुल प्रसाद सती 17

वयस्कों के व्यक्तित्व विकास में अष्टांग योग की भूमिका
सुनिल कुमार शर्मा 22

जैनदर्शन- वाङ्मय में वास्तुविद्या एक आयाम
डा. रविन्द्र प्रसाद उनियाल 27

नवम्बर 2021

वेदज्योतिष्मती ISSN – 2349-3100

मॉरीशस में गंगा तालाब तीर्थ : एक सांस्कृतिक विरासत

Dr. Umesh Kumar Singh

सारांश (Abstract) :- हिंद महासागर में स्थित एवं एक मोती तरह चमकले वाला द्वीप मॉरीशस का नाम सुनते ही मन में एक बार वहाँ जाने की उत्सुकता जगने लगती है यह वह देश है जिसे भारतीय प्रवासियों ने अपने खून पसीने से सींचकर पल्लवित और पुष्पित किया है। इस देश को ज्वालामुखियों के लावा का देश भी कह सकते हैं। चारों ओर ज्वालामुखी से बने पहाड़ और लावा के दर्शन होते हैं। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने शूद्रा नाम की कहानी में मिरिच देश नाम का उल्लेख किया है। इस देश में अधिकांशतः हिन्दू धर्म के अनुयायी निवास करते हैं। मॉरीशस का नाम सुनते ही मन में इस देश में जाने की उमंग उठने लगती है इस देश में पहुँचकर स्त्री और पुरुषों के भारतीय पहनावे को देखकर भारत में होने का भान और अनुभव होने लगता है। भारतवासी और मॉरीशस वासी इस देश को लघु भारत के नाम से संबोधित किया करते हैं। इस देश का सबसे बड़ा आश्चर्य गंगा तालाब माना जा सकता है।

मॉरीशस में गंगा तालाब की खोज 1897 के संबंध में जिन तीन पवित्र आत्माओं के नामों का उल्लेख मिलता है। उन लोगों को गोबासा में ईश्वरीय शक्ति के दर्शन हुए थे। उन लोगों में पं संजीबोन लाल, झमन गिरी एवं नरेंद्र गिरि आदि के नाम प्रमुख हैं। आज यह तालाब मॉरीशस के हिंदुओं की आस्था और प्रतीक के रूप में जाना जाता है। इस देश में प्रतिवर्ष फरवरी माह में शिवरात्रि पर्व के अवसर पर भारत की तरह भव्य और बड़ी कांवरियों की कतार में स्त्री पुरुष बड़े भक्तिभाव और आस्था के साथ बम भोले के जयकारों की ध्वनि के साथ आगे बढते हैं। यह दृश्य धार्मिक और आस्थावान लोगों के लिए पवित्र तीर्थ से कम प्रतीत नहीं होता है।

प्रमुख शब्द (Key wards) :- ज्वालामुखी-Valcano, गंगा तालाब – Ganga Talab, गोबासा-gonbase, प्रयागराज, देव प्रयाग, रुद्र प्रयाग, कर्ण प्रयाग, नन्द प्रयाग, विष्णु प्रयाग इत्यादि।

शोध प्रविधि (Research Methodology) :- इस शोध पत्र लिखने के लिए एवं शोध को अंतिम लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए आधुनिक आलोचनात्मक और समीक्षात्मक शोध प्रविधियों को प्रयोग किया जाएगा।

विषयवस्तु (Subject) :- मॉरीशस का नाम सुनते ही मन में पर्यटन के लिए जाने की उत्सुकता जगने लगती है क्योंकि इस देश में हमारे देश के पूर्वजों के अवशेष है। यह वह देश है जिसे भारतीय प्रवासियों ने अपने खून पसीने से सींचकर पल्लवित एवं पुष्पित किया है किन्तु इस देश को ज्वालामुखियों के लावा का देश भी कह सकते हैं। चारों ओर ज्वालामुखी से बने बड़े-बड़े पहाडों और लावा के दर्शन होते हैं। आज जहां चारों तरफ गन्ने की लहलहाती खेती की हरियाली ही दृष्टिगोचर होती है। ईक समय था चारों तरफ पत्थर और जंगलों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। इस देश में बड़ा सीधा एवं मनुष्यों से अत्यंत प्रेम करने वाला पक्षी डोडो इस पर्वतों और समुंदरों का राजा माना जाता था। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने शूद्रा नाम की कहानी में मिरिच देश नाम का उल्लेख किया है। यह मॉरीशस देश ही है जिसमें भारत से इतर अधिकांशतः हिन्दू धर्म के अनुयायी निवास करते हैं। इस देश में पहुँचकर स्त्री और पुरुषों के भारतीय पहनावे को देखकर भारत में होने का भान और गौरव का अनुभव होने लगता है। भारतीय और मॉरीशस वासी इस देश को लघु भारत के नाम से संबोधित करते हैं। इस देश का सबसे बड़ा आश्चर्य गंगा तालाब का होना माना जा सकता है मॉरीशस में गंगा तालाब जैसा मधुर वचन सुनने को मिल सकते हैं। मॉरीशस में गंगा तालाब की खोज के संबंध में कई धारणाएँ प्रचलित हैं। गंगा तालाब को पहने ग्रांड बेसिन के नाम से जाना जाता था। आज भी इसे पुरानी पीढ़ी के लोग गंड बेसिन अथवा गोबासा के नाम से ही पुकारते हैं। गंगा तालाब को आज भी कुछ पुरानी पीढ़ी के लोग इसे परी तालाब के नाम से पुकारते हैं। गंगा तालाब की खोज 1897 में हुई थी। [1]किन्तु इस संबंध में तीन नामों का उल्लेख मिलता है। इनमें 1 पं. संजीबोंलाल

ISSN – 2349-3100

रामसुंदर 2. पं. झमन गिरि एवं 3. नरेंद्र गिरि नाम आदि का नाम प्रमुख है।[2] इन तीन लोगों को परी तालाब पर शक्ति का आभास हुआ था। इस बात से क्षण मात्र भी इनकार नहीं किया जा सकता है किन्तु इनमें से एक व्यक्ति का नाम की महिमा मंडन करना और अन्य को भुला देना उचित नहीं है क्योंकि तीनों आत्माएँ अब दिवंगत हने के साथ परमपिता परमेश्वर में लीन हो चुकी हैं। पंडित संजीबोन लाल के संबंध में कुछ सूचनाएँ मिलती हैं। उनका जन्म उड़ीसा में हुआ था। उनकी मातृ भाषा संस्कृत और हिंदी थी। उन्होने संस्कृत रामायण ग्रंथ एवं अन्य ग्रन्थों की विषद व्याख्या की थी। उनका द्वार प्रत्येक समय किसी के लिए भी खुला रहता था। वे अनाथ और विधवाओं की देखभाल किया करते थे। यह एक प्रकार का आश्रम था। मॉरीशस में सभी गिरमिटिया के रूप में ही गए थे।[3]

आज गंगा तालाब मॉरीशस के हिंदुओं की आस्था और प्रतीक के रूप में जाना जाता है। इस देश में प्रतिवर्ष फरवरी माह में शिवरात्रि पर्व के अवसर पर भारत की तरह भव्य और बड़ी कांवरियों की कतार में स्त्री पुरुष बड़े भक्तिभाव और आस्था के साथ बम भोले के नारों की जय की ध्वनि और गूज़ की प्रतिध्वनित सुनाई पड़ती है। इतना ही नहीं इस देश में हिंदुओं के श्रीगणेश चतुर्थी, होली दीपावली आदि हिंदू त्योहार विधि पूर्वक बड़े मनोयोग के साथ मनाए जाते हैं।इसी प्रकार से भारतदेश के प्राकृतिक सौन्दर्य के संदर्भ में गीताप्रेस गोरपुर द्वारा सम्पादित मत्स्यपुराण में भारतदेश के सात महान पर्वतों का वर्णन स्पष्ट रूप किया गया है - **"विंध्यश्च पारियात्रश्च इत्येते कुलपर्वता: । तेषां सहस्रष्चन्ये पर्वतास्तु समीपत:"॥**[4]अर्थात् भारत में सात विश्व विख्यात कुलपर्वत हैं। जिनमें महेंद्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्षवान, विन्ध्य और परियात्र का परिगणन किया गया है। इनके समीप अन्य हजारों पर्वत हैं।मॉरीशस में गंगा तालाब की बात करने अवसर पर भारत में स्थित पवित्र गंगा, गंगा के उद्गम स्थल गोमुख के साथ-साथ पवित्र स्थल प्रयाग एवं तीर्थराज / प्रयागराज आदि की चर्चा करना अतिआवश्यक बन जाता है। गंगा नदी के उद्गम स्थान के संदर्भ में मत्स्यपुराण में सभी नदियों के प्राकट्य के संदर्भ में स्पष्ट रूप से कहा गया है - **"पीयन्ते यैरिमा नद्यो गङ्गा सिंधु: सरस्वती। शतद्रुश्चन्द्रभागा च यमुना सरयुस्तथा।**

इरावती वितस्ता च विपाशा देविका कुहु:॥गोमती धूपपापा च बाहुदा च दृषद्वती।

कैशिकी च तृतीया च निश्चीरा गण्डकी तथा॥ चक्षुर्लौहित इत्येता हिमवत्पादिन: सृता:॥ अर्थात् गंगा, सिंधु, सरस्वती, शहद्रु (सतलज) चंद्रभागा (चिनाव) यमुना, सरयू, इरावती (रावी) वितस्ता (झेलम), विपाशा (व्यास), देविका, कुहू, गोमती , धूपपापा (धोपाप), बाहुदा, दृषद्वती कौशिकी (कोसी), तृतीया, निशचीरा, गण्डकी, चक्षु, लौहित ये सभी नदियां, हिमालय की उपत्यका से तलहटी से निकली हुई हैं।[5]

भारत में हिंदुओं का पवित्र स्थल तीर्थराज प्रयाग को धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है किन्तु सभी प्रयागों में प्रयागराज का राजा तीर्थराज प्रयाग, इलाहाबाद को माना जाता है। यहां पर तीन पवित्र नदियों का संगम है जिनमें श्री गंगा, श्रीयमुना और श्रीसरस्वती आदि नदियों का संगम स्थल है। इन नदियों के जल का मिलन स्पष्ट रूप से तीर्थराज प्रयाग में देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त भारत में पाँच पवित्र प्रयागों का उल्लेख मिलता है। जिनमें 1. देव प्रयाग 2. रुद्र प्रयाग, 3. कर्ण प्रयाग, 4. नन्द प्रयाग, 5. विष्णु प्रयाग आदि हैं। देव प्रयाग - उत्तराखंड के पाँच प्रयागों में से एक है। यह अलकनंदा और भागीरथी दोनों नदियां का पवित्र मिलन स्थल है। यह दोनों नदियां आगे चलकर गंगा का रूप ले लेती हैं इसीलिए देव प्रयाग का विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान है। रुद्र प्रयाग - बद्रीनाथ होकर आने वाली अलकनंदा और मन्दाकिनी के मिलन को रुद्र प्रयाग कहा जाता है। यह भगवान शिव के नाम पर रुद्र प्रयाग पड़ा है। इसी स्थान पर नारद जी ने महाकाल की तपस्या की थी। कर्ण प्रयाग -

ISSN – 2349-3100

अलकनंदा और पिण्डक नदी का संगम स्थल है। इस स्थान का नाम महाभारत के बलशाली योद्धा दानवीर कर्ण के नाम पर पड़ा है। नन्द प्रयाग - यह नंदाकिनी और अलकनंदा दोनों नदियों का मिलन स्थल है। राजा नन्द ने पुत्र प्राप्ति के लिए तपस्या की थी। भगवान विष्णु ने उन्हें पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया था। विष्णु प्रयाग - विष्णु प्रयाग बाबा बद्रीनाथ के दरबार के अति निकट स्थिति है। यहां अलकनंदा और विष्णु गंगा नदियों का मिलन स्थल है। इसी स्थान पर नारद मुनि ने भगवान विष्णु की तपस्या की थी। इसी स्थान विशेष पर भगवान विष्णु का मंडी स्थि है।मॉरीशस में गंगा तालाब की बात करने अवसर पर भारत में स्थित पवित्र गंगा, गंगा के उद्गम स्थल गोमुख के साथ-साथ पवित्र स्थल प्रयाग एवं तीर्थराज / प्रयागराज आदि की चर्चा करना अतिआवश्यक बन जाता है। गंगा का उद्गम स्थल गोमुख माना जाता है। भारत में हिंदुओं का पवित्र स्थल तीर्थराज प्रयाग को धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है किन्तु सभी प्रयागों में प्रयागराज का राजा तीर्थराज प्रयाग, इलाहाबाद को माना जाता है। यहां पर तीन पवित्र नदियों का संगम है जिनमें श्रीगंगा, श्रीयमुना और श्रीसरस्वती आदि नदियों का संगम स्थल है। इन नदियों के जल का मिलन स्पष्ट रूप से तीर्थराज प्रयाग में देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त पाँच पवित्र प्रयागों का उल्लेख मिलता है। जिनमें 1. देव प्रयाग 2. रुद्र प्रयाग, 3. कर्ण प्रयाग, 4. नन्द प्रयाग, 5. विष्णु प्रयाग आदि हैं।[6]मॉरीशस में तेरहवाँ ज्योतिर्लिंग शिवजी के मंदिर में 1800 फीट की ऊंचाई पर गंगा तालाब पर स्थित स्थापित है। इसी तालाब पर तेरहवाँ ज्योतिर्लिंग में भारत के ***प्रधानमंत्री "माननीय नरेंद्र मोदी जी ने पूजा की थी। उन्होने श्री गंगा तालाब में गंगोत्री से लाया गया जल भी चढ़ाया"।*** मॉरीशस में भ्रमण हेतु जाने वाले भारतवासी पूजा अर्चना और दर्शन करने गंगा तालाब जाने में सौभाग्य का अनुभव करते हैं।[7]

इस संबंध में भारत स्थित बारह ज्योतिर्लिंगों की चर्चा करना समीचीन है जिनके भारत के हिन्दू दर्शन करना अपना सौभाग्य समझते हैं। प्रथम ज्योतिर्लिंग सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन, उज्जयिनी में महाकाल, ओंकारेश्वर अमरेश्वर, हिमालय केदारनाथ, डाकिनी भीमशंकर, काशी में विश्वनाथ, गौतमी के तट पर त्रिंबकेश्वर, चिंतभूमि में वैद्यनाथ, दारुकवान में नागेश्वर, सेतुबंध पर रामेश्वर और शिवालय में घुश्मेश्वर आदि। शिव की अनोखी प्रतिमा गंगा तालाब पर स्थित प्रकृतिक गंगा झील के पास खड़ी मुद्रा में स्थापित की गई है। गंगा तालाब अथवा झील को ग्रांड बेसिन भी कहा जाता है। इसको लोग पारी तालाब के नाम से भी जानते है। यह मॉरीशस के मध्य में सावने जिले के सुदूर पर्वतीय क्षेत्र में झीलनुमा या प्राकृतिक झील के रूप में स्थित है। यह समुद्र तल से 1800 फीट ऊपर स्थित है। गंगा तलब जाने वाला तीर्थयात्रियों का पहला समूह त्रियोले ग्राम से था। इसको मॉरीशस का सर्वाधिक पवित्र स्थल माना जाता है। यहाँ पर भगवान शिव का मंदिर झील के किनारे स्थित है। शिवरात्रि के पर्व के अवसर पर मॉरीशस में अद्भुत एवं अति सुंदर दृश्य परिलक्षित होते हैं। इस अवसर पर भव्य समारोह का आयोजन किया जाता है। यह उत्सव तीन दिन तक मनाया जाता है। इस अवसर पर मॉरीशस के प्रत्येक गांव और शहर के लोग गांव में स्थित शिवालयों पर जल चढ़ाने के लिए अपने गांव और शहर से पैदल नंगे पाँव और कांवर लेकर चलते है। सम्पन्न लोग अपनी कारों भी जाते हैं, इस अवसर पर कुछ अपने पीठ पर पहनने वाला पिट्ठू बैग के साथ भी जाते हैं किन्तु देश के प्रत्येक शिवालय से गांव और शहर के युवाओं की टोली बढ़े-बढ़े समूहों में एवं बड़ी-बड़ी अतिमोहक सुंदर कावरों के साथ जत्थे के जत्थे निकलते हैं। सभी कावरिया दिन रात की यात्रा करके गंगा तालाब पहुँचते हैं। गंगा तालाब पहुँचने वाले प्रत्येक कवारियों, तीर्थ यात्रियों एवं यात्रियों के लिए रात्रि विश्राम करने एवं जलपान एवं भोजन की उचित व्यवस्था हिन्दू महासभा एवं ग्राम पंचायतों, कुछ स्वयं सेवी संस्थाओं आदि के द्वारा की जाती है। इसके साथ यहाँ उत्सव के साथ तीर्थ मेले का दृश्य भी दिखलाई पड़ता है। इस

विस्तृत विवेचन के उपरांत निश्चित रूप से कहा जा सकता है।मॉरीशस में गंगा तालाब का होना भारत के लिए सांसकृतिक महत्व के साथ धार्मिक आस्था का पवित्र स्थल भी है।

उपसंहार (conclusion) :- अन्त में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि **"मॉरीशस में गंगा तालाब तीर्थ : एक सांस्कृतिक विरासत"** वास्तव में साधना का तीर्थ स्थान है। यहाँ रहने वाले प्रवासी भारतीयों की आस्था के लिए गंगा तालाब बहुत प्रसिद्ध है। मॉरीशस मे रहने वाले हर घर के वासी बहुत श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक गंगा तालाब का दर्शन करते हैं। यह तीर्थ स्थान आध्यात्मिक साधना एवं भक्ति का अन्यतम तीर्थस्थल है। भारतीय संस्कृति में प्रतीकात्मक दर्शन में यह गंगा तालाब पूर्णत: आध्यात्मिक चेतना का साक्षात्कार करवाने में सिद्ध पीठ के रूप में प्रतिष्ठित है।

संदर्भ (Bibliography)

1. पं. आत्माराम विश्वनाथ, मॉरीशस का इतिहास, सं प्रह्लाद रामशरण, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 प्रथम संस्करण वर्ष-1923, द्वातीय वर्ष-1998, पृष्ठा सं. 320-327

2. श्रीमती मालती, पूर्व अध्यक्षा, संस्कृति विभाग, स्कूल ऑफ इंडोलोजीकल स्टडीस, महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट, मोका, मॉरीशस।

3. श्रीमती मालती, पूर्व अध्यक्षा, संस्कृति विभाग, स्कूल ऑफ इंडोलोजीकल स्टडीस, महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट, मोका, मॉरीशस।

4. मत्स्यमहापुराण, संवत 2074 तेरहवाँ पुनर्मुद्रण,सचित्र हिंदी अनुवाद सहित गीता प्रेस गोरखपुर, अध्याय संख्या, 114 , श्लोक संख्या, 18

5. मत्स्यमहापुराण, संवत 2074 तेरहवाँ पुनर्मुद्रण,सचित्र हिंदी अनुवाद सहित गीता प्रेस गोरखपुर, अध्याय संख्या, 114 , श्लोक संख्या, 20,21,22

6. https://en.bharatdiscovery.org/india

7 . https://www.bhaskar.com/news/INT-pm-narendra-modi-prays-at-ganga-talab

8. पोद्दार (सं) हनुमानप्रसाद, शिवपुराण संक्षिप्त मोटा टाइप केवल हिंदी, गीता प्रैस गोरखपुर -273005 पृष्ठ सं. 493

Associate Professor,Department of Hindi and Comparative Literature, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya,Gandhi Hills, Wardha-442001 (Maharashtra) Bharat.

143

अक्षरा

201

यू.जी.सी. द्वारा मान्यता प्राप्त

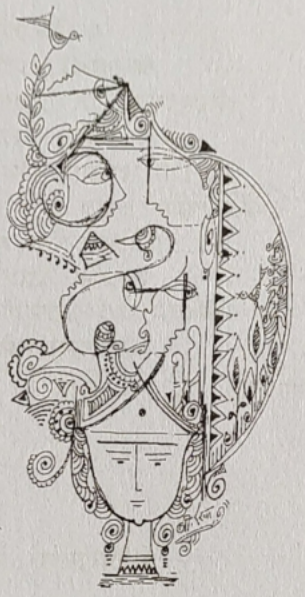

कैलाशचन्द्र पन्त
प्रधान सम्पादक

सुशील कुमार केडिया
प्रबंध सम्पादक

डॉ. सुनीता खत्री
सम्पादक

श्रीमती-जया केतकी
सम्पादन सहयोग

सुधा बाथम
अक्षर-संयोजन

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 300 रुपए
दस वर्षीय सदस्यता शुल्क : 3000 रुपए
एक प्रति 25 रुपये
विदेशों के लिए : एक अंक : 5 डॉलर, वार्षिक : 60 डॉलर
चेक या ड्राफ्ट 'म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति- 'अक्षरा' के नाम देय
ऑनलाइन पेमेंट के लिये- इंडियन बैंक, हिन्दी भवन शाखा, भोपाल
Ac/ No. 50413818696, IFSC- IDIB000T610

सम्पर्क : म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462002 (म.प्र.)
दूरभाष : 0755- 2660909, 2661087, ई-मेल - myakshara18@gmail.com
hindibhawan.2009@rediffmail.com
वेबसाइट - www.akshara.page, www.madhyapradeshrashtrabhasha.com

अक्षर

अंक-201 दिसंबर- 2021

सम्पादकीय

सबद निरन्तर

एक जीवनी के निमित्त से : **रमेशचन्द्र शाह** 8

आलेख

महान पुरुवंश की गौरवगाथा : **कुसुमलता केडिया** 18

राजनैतिक दल : पुनर्गठन की सार्थक दिशा : **किशन पंत** 22

महामारी और मोक्ष की बदलती अवधारणाएँ - दो : **विनोद शाही** 26

नवगीतों के शलाकापुरुष : यतीन्द्रनाथ राही : **मनोहर अभय** 30

गद्यभूमि का ललित कांतार : नीम की छाँव : **रामदरश राय** 33

विरह और वेदना का अमर स्वर : महादेवी की कविता : **नवीन नंदवाना** 36

नये सामाजिक माध्यम और जनमत निर्माण : **कविता भाटिया** 40

हिंदी नाट्यालोचन : संश्लिष्ट आलोचना पद्धति : **प्रेमलता** 44

फिल्में एवं राजस्थानी लोक संस्कृति : विजयादान देथा : **पीताम्बरी** 48

साहित्य में चित्रित मछुआरा समाज : **उमेश कुमार सिंह** 51

स्मरणांजलि

मेरे लिये मन्नू जी... : **सूर्यबाला** 55

संस्मरण

मीठी यादें : **शैवाल सत्यार्थी** 58

पुण्यस्मरण

प्रभाकर माचवे और उनका काव्य चिंतन : **राजेन्द्र परदेसी** 60

ललित निबंध

सेतुबंध पर गिलहरी : **गोविन्द गुंजन** 63

अनुवाद (मराठी कविताएँ)

कविता और मैं, मेरे नन्हे से हस्ताक्षर, खो चुका है कवि :
मूल-संजय चौधरी, अनु. : **सूर्यनारायण रणसुभे** 67

कहानी

रात भर बर्फ : **संतोष श्रीवास्तव** 69

बस थोड़ा वक्त और प्यार चाहिये : **कुसुम अग्रवाल** 72

समय चक्र : **उषा जायसवाल** 78

लघुकथा

भेड़पुरा : **योगेन्द्र शर्मा** 82

कद : **सीताराम गुप्ता** 83

कविता
विध
पिता
रिश्ते
पित
गीत / नवगीत
कृपा
गीत
अहो
मीठ
कुंड
बाल-पृष्ठ
शीश
समय और विच
मृत्
पुस्तक परिचय
निर
कां
स
भ
पुस्तक चर्चा
कु
समीक्षा
प्र
च
स
पत्रांश

कविता

विध्वंसक : **रामदेव भारद्वाज** 84
पिता, पिता की चिट्ठी : **सुदर्शन वशिष्ठ** 85
रिश्ते होते हैं : **घमंडीलाल अग्रवाल** 86
पिता, भोली बेटियाँ : **अनीता रश्मि** 87

गीत / नवगीत / दोहे

कृपाशंकर शर्मा अचूक के दो गीत 88
गीत : **अशोक कुमार** 89
अहोभाग्य मेरे, जन्म से : **अनुपमा 'अनुश्री'** 90
मीठी तेरी याद : **लक्ष्मीनारायण चौरसिया** 91
कुंडलियाँ : **जय जयराम आनंद** 92

बाल-पृष्ठ

शीश कभी न झुकने देंगे, चंदन वन में : **लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव** 93

समय और विचार - 20

मृत्यु अवकाश पर है : होसे सरामागो (पुर्तगाल) : **रमेश दवे** 94

पुस्तक परिचय

निराला बचपन (शीला श्रीवास्तव) : **सुमन ओबराय,** जीवन के रंग
(विजया बैस रैकवार) : **केतकी** 97
कांकरीट के जंगल (रमेश मनोहरा), राय साहब की चौथी बेटी (प्रबोध कुमार गोविल)
: **अनीता सक्सेना** 98
सही शब्द की तलाश में (दुर्गा प्रसाद झाला) : **ब्रजेश कानूनगो** 99
भारत और ग्वालियर के संग्रहालयों में (अमिता खरे) : **नारायण व्यास** 99

पुस्तक चर्चा

कुछ नीति कुछ राजनीति (भवानी प्रसाद मिश्र) : **रामेश्वर मिश्र पंकज** 100

समीक्षा

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में भौतिकशास्त्र (नारायण गोपाल डोंगरे, शंकर गोपाल नेने)
: **वैशाली वाळिंबे** 104
चोंच भर बादल (वीना श्रीवास्तव) : **शिवकुमार अर्चन** 106
साहित्य का धर्म (विश्वनाथ प्रसाद तिवारी): **वन्दना मिश्र** 107
ये शब्द गीत मेरे (सतीश गुप्ता) : **मीना शुक्ला** 108
सरहदों के पार दरख्तों के साए (रेखा भाटिया) : **सुधा ओम ढींगरा** 109
स्त्री-पुरुष (सुरेश पटवा) : **घनश्याम मैथिल 'अमृत'** 110

पत्रांश 111

साहित्य में चित्रित मछुआरा समाज

- उमेश कुमार सिंह

जन्मस्थान - नगौला जवान (अलीगढ़)।
शिक्षा - पीएच.डी।
सम्मान - अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी सम्मान से सम्मानित।

मछुआरे समाज में स्त्री जीवन की पड़ताल करने के लिए इस शोध पत्र में पिछली सदी में मछुआरों के समाज को केंद्र में रखकर लिखे गए महत्त्वपूर्ण उपन्यासों में नागार्जुन के 'वरुण के बेटे' की मधुरी तथा उदय शंकर भट्ट के 'सागर, लहरें और मनुष्य' की स्त्री पात्र रत्ना को इसलिए चयनित किया गया है क्योंकि इन दोनों उपन्यासों में मछुआरे समाज के समक्ष अपना पेट भरने के लिए मछली पकडकर ही जीवन की सभी वस्तुओं की आपूर्ति करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं हैं परंतु इन दोनों कृतियों में परिवेश के स्तर पर अंतर मात्र इतना है 'वरुण के बेटे' में भारत के भीतरी भाग में स्थितमीठे पानी के जलाशयों से मछली पकड़ने वाले मछुआरे, गढ़पोखर में से मछली पकड़कर अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं। 'सागर, लहरें और मनुष्य' उपन्यास मुंबई के समीप बसे वर्सोवा के समुद्र तट के समुद्र से मछली पकड़ने वाले मछुआरों के जीवन पर लिखा गया है।

'वरुण के बेटे' उपन्यास में अनेक स्थानों पर मछुआरिन स्त्रियों की गरीबी, बदहाली और उनकी मजबूरी से आमना-सामना होता है जैसे-'तिक्कड़ का डबल टुकड़ा तोड़कर भुरता जरा सा उसमें लगाकर निवाला उसने मुँह में डाला और सोचने लगी-क्या वही चिथड़ा झुलाती अम्मा अस्पताल जायेगी? तार-तार हो गया है समूचा नूआ (लुंगा) अब और एक दिन भी पहनने लायक नहीं रह गया है फिर भी उसे पहने जा रही है? (वरुण के बेटे, नागार्जुन पृ. 21)

इसी प्रकार के और अनेक दृश्य इस उपन्यास में भरे हैं। 'धनहा चौर का पानी छोटी मछलियों का अटूट खजाना था। पानी वाली सैकड़ों एकड़ जमीन घिरी थी। दो-दो तीन-तीन परिवारों ने मिल जुलकर थोड़ी-थोड़ी दूर पर हिस्सा अपने-अपने अधिकार में ले रखा था। फूँस की दसियों अस्थाई झोपड़ियाँ चिलमनों से हटकर सूखी जमीन पर खड़ी थीं। रात को तो कम-सम, मगर दिन की मीठी धूप में झोपड़ियों का यह संसार मुखर हो उठता। लगता कि मोजें गोंडियारी के मल्लाहों-मछुओं की आधी आबादी यहीं आ गयी। (वही पृ. 87) 'कछारों में केकड़े या कछुए खोजते हुए नंग-धड़ंग लड़के। जलते चूल्हों पर काली हांडियाँ, करीब बैठकर हल्दी-लाल मिर्च पीसती हुई सयानी लड़कियाँ। (वही पृ. 86) 'मधुरी के भाई-बहन मचल रहे थे कि एक-एक मगुरी मिल जाये तो भूनकर खाएँ परंतु उसने पूरे परिवार की सुविधा का ख्याल किया। तीन तो मिलाकर आधा सेर होंगी। तो

क्या होगा दिदिया ? बाप रे, पाँच आना पैसे कुछ नहीं हैं तेरे लेखे ?' (सागर लहरें और मनुष्य , उदयशंकर भट्ट पृ. 142) यह मछुआरों की गरीबी का नमूना है, भारत के मछुआरों के नौनिहाल बच्चे बस एक-एक मछली भूनकर खाना चाहते हैं। वे सेब, अनार और आम नहीं माँग रहे हैं परंतु गरीबी की मार उन्हें मछली भी नहीं खाने देती है जिसका उनके माता-पिता स्वयं उत्पादन कर रहे हैं।

वरुण के बेटे उपन्यास में वर्णित उन मछुआरों के घर जिनमें खपरैल और छत वाले घर दो तीन परिवारों के ही थे बाकी छान-फूँस की कुटीरें थीं। आग लगती तो इस छोर से उस छोर तक समूचा गाँव स्वाहा। बाढ़ आती तो घरों में पानी घुस आता, भीतें धँस जातीं और छप्पर बह जाते। हैजा और मलेरिया का तांडव आबादी को मसान बनाकर छोड़ जाता। (वही पृ. 10) 'कोसी का जहरीला पानी बीमारियाँ काफी ले आया था फिर भी मृत्यु पर जिंदगी हावी थी।' (वरुण के बेटे, नागार्जुन, पृ. 51)

'सागर, लहरें और मनुष्य' में अशिक्षित सगी हैजे से पीड़ित अपने इकलौते बेटे पोपट के रोग का इलाज हकीम से करवाती है। उससे फायदा नहीं होता है परन्तु इसकी सूचना अस्पताल में नहीं देती। उसे लोगों से पता चलता है कि डॉक्टर को दिखाने पर हैजे के घर 'क्वारंटीन' भेजना पड़ेगा। वहाँ सौ में से शायद एक ही कोई बच पाता है। निर्धन और अशिक्षित समाज में अस्पताल के प्रति भावना एक यथार्थ सत्य है और सगी भी इसका अपवाद नहीं। (सागर लहरें और मनुष्य, उदयशंकर भट्ट पृ. 251) सागर लहरें और मनुष्य में गाँव की बदहाली का दृश्य ऐसा है। 'अँधेरी से आती एक लंबी सड़क के किनारे पूर्व और पश्चिम में यह गाँव बसा है। कुछ पक्के मकान, लेकिन अधिकतर कच्चे और छप्पर वाले। आदमियों की पोशाक एक बनियान या कमीज। नीचे घुटनों के ऊपर तिकोना रंगीन रूमाल पहने रहते हैं। पीछे का भाग खुला। स्त्रियाँ रंगीन लंग्दार साड़ी या धोती पहनती हैं ऊपर चोली, धोती का फेंटा कमर में खोंसा रहता है।' (वरुण के बेटे, नागार्जुन पृ. 111) इस प्रकार इन दोनों कृतियों में भयंकर गरीबी दृष्टिगोचर है। वरुण के बेटे में तो अनेक स्थानों पर गरीबी के दृश्य मिलते हैं जैसे-चाहे वह बाढ़ का दृश्य हो अथवा बच्चों द्वारा मछली माँगकर उसे भूनकर खाने की बात हो। कदम-कदम पर मछुआरा समाज गरीबी से दो-दो हाथ करता नजर आता है। इसी प्रकार सागर लहरें और मनुष्य उपन्यास में भी गरीबी दिखाई पड़ती है।

रत्ना एक ऐसी साहसी नारी की प्रतीक है जो कभी पीछे मुड़कर देखना नहीं जानती है। जब उसका पति उसे धन कमाने की मशीन समझकर दूसरों के पास भेजता है, तब वह विरोध ही नहीं करती बल्कि वह अपने पति की पिटाई कर भी देती है तथा साथ में अपने पति के पार्टनर लक्षमन और उसके साथी काशीनाथ सेठ के साले छन्नूमल और वकील धीरूवाला सभी की डन्डों और जूतों से पिटाई करती है क्योंकि वे उसे अपनी वासना की तृप्ति का माध्यम बनाना चाहते हैं। वह माणिक को छोड़ देने के पश्चात् वर्सोवा में अपनी माँ के पास जाकर रहने के लिए कतई तैयार नहीं है। सारिका के बार-बार समझाने पर वह दृढ़ता से उत्तर देती है। 'मैं वर्सोवा नहीं जाऊँगी। अपने पैरों पर खड़ी होऊँगी, चाहे कितना भी दु:ख मुझे झेलना पड़े। मैं दु:ख देखना चाहती हूँ, सारिका मैं

संघर्ष करूँगी, मैं देखना चाहती हूँ, मैं क्या कर सकती हूँ।'(वही पृ. 85)

वरुण के बेटे की नायिका मधुरी ही सही अर्थों में लेखक की साम्यवादी चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। वह समाज की सबसे सशक्त संस्था विवाह को चुनौती देकर और पुराने सामाजिक-नैतिक मानव मूल्यों को तोड़कर नए मानव मूल्यों का आह्वान करती है। वस्तुतः उसका चरित्र प्रेमचंदोत्तर नैतिकता के विकास में मील का पत्थर है। मधुरी चेतना की नई सजग नारी है इसलिए वह अपने निस्सार-निरर्थक विवाह के बंधनों को नि-संकोच तोड़ डालती है। वह विवाह जैसी संस्था को सामाजिक बंधन न मानकर वैयक्तिक समझौते के रूप में देखती है तथा वह विवाहोपरांत ससुर द्वारा किये जानेवाले अमानुषिक अत्याचारों में पति के सहयोगी होने पर पति को छोड़कर पिता के घर चली आती है। वह अपने इस कृत्य से विवाह की इस परंपरागत नैतिकता को चुनौती देती है

मधुरी समाज के गरीब, पिछड़े तबके से आई युवा स्त्री है, इसका उसे अहसास है। इसलिए वह कदम-कदम पर बाढ़ पीडितों की बड़ी ईमानदारी से मदद करती है जब कि रत्ना जिस समाज में पली, बड़ी हुई है उस जगह और उन लोगों से दूर भागती है। हम पढ़ी-लिखी रत्ना के रूप में अन्य शिक्षित युवाओं को देख सकते हैं। प्रगति करना अच्छी बात है परन्तु पढ़-लिखकर अपनों से और अपने समाज से दूर भागें तब उनके समाज का विकास कैसे हो सकेगा।

मछुआरे समाज के लोग काम के बाद जब भी अपनी मौज में होते हैं, पीकर झूमते और गीत गाते हैं। हमें यह स्थिति लगभग दोनों रचनाओं में देखने को मिलती है।

'वरुण के बेटे' और 'सागर लहरें और मनुष्य' इन दोनों रचनाओं के लेखक भले ही एक-दूसरे से हजारों किलोमीटर दूर बैठे थे किन्तु उनकी संवेदनाएँ एक तरह की प्रतीत होती हैं, दोनों क्षेत्रों के मछुआरों के समाज की विशेषता और सोच भी एक जैसी एवं समान प्रतीत होती है। दोनों समाज मेहनतकश हैं परन्तु जब भी उन्हें काम के बाद अवसर मिलता है आदमी और औरत मस्ती में झूमते और गाते हैं।

सागर लहरें और मनुष्य में लेखक ने आधुनिक सभ्यता-संस्कृति के संस्पर्शों से दूर अशिक्षित, असभ्य और अर्धसभ्य मछलीमारों के जीवन की बाह्य कुरूपता के भीतर झाँककर आंतरिक सौंदर्य को अत्यंत मानवीयता के साथ उभारा है। उपन्यास में मछुआरों के जीवन के आचार-विचार, रहन-सहन, सुख-दुःख का अंकन किया है एवं इस उपन्यास की पात्र रत्ना के व्यक्तित्व का विकास ग्रामीण और शहरी सभ्यता दोनों के सम्मिश्रण से होता है। रत्ना वर्सोवा से दूर भाग जाना चाहती है। उसका मन बम्बई के वैभव के लिए छटपटाता रहता है।

रत्ना अपने इस वर्तमान जीवन से असंतुष्ट है। उसका मन नए जीवन की उमंगों से आलोड़ित रहता है और उनकी पूर्ति के लिए वह विवाह ऐसे व्यक्ति से करना चाहती है जो जीवन की भौतिक सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण हो। वह सारिका से कहती है-'मुझे वर्सोवा से नफरत है। यहाँ के लोगों से, काम से नफरत है। दुनिया इतनी आगे बढ़ गई है और हम अभी तक बाप-दादों की तरह मछली मार रहे हैं। न ऊँचाई, न रहन-सहन, न कुछ और....मैं तो किसी बहुत ऊँचे से शादी करना चाहती हूँ। जहाँ

मैं बड़ी बनकर रह सकूँ।' सारिका के यह कहने पर-'उमंगें बुरी नहीं हैं रत्ना। पर गरीब आदमी को यह सब मिलता कहाँ है?' रत्ना अटूट विश्वास से उत्तर देती है-'मुझे मिलेगा।' वह सारिका से कहती है। 'मैंने इतना पढ़ा है तो क्या इसलिए कि गावड़े के एक गँवार से शादी करूँ और मछली लिए डोलूँ।' मधुरी ग्राम गोरी होकर भी प्यार कर बैठती है लेकिन वह अपने समाज से कटना अथवा दूर नहीं जाना चाहती है जबकि रत्ना अपने समाज से बड़ा बनने की खातिर भागती है।

इन उपन्यासों में मछुआरों का जीवन संघर्ष है तथा मछुआरे उस सागर की गोद में रहते हैं जो उनकी जीविका का मुख्य स्रोत ही नहीं बल्कि उनकी समृद्धियों और विपत्तियों का सूत्रधार है एवं उसी से उनके जीवन के समस्त क्रिया-कलाप जुड़े हुए हैं। इस समाज की औरतें अन्य भारतीय समाजों की अपेक्षा कुछ खुले विचारों की होती हैं। मधुरी और रत्ना अत्याचार सहन न करके विद्रोह कर देती हैं और दोनों अपने पतियों को छोड़कर दूसरे पति का वरण स्वयं कर लेती हैं। जबकि अन्य स्त्रियाँ अत्याचार सहतीं। इस समाज की स्त्रियों का रहन-सहन, आचार-विचार, आत्मविश्वास, खुलापन होने के कारण इस समाज की स्त्रियों का पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर मेहनत मजदूरी करती हैं। इस समाज में शिक्षा का अभाव दृष्टिगोचर होता है जो मुख्य कारण है जिससे इस समाज के लोग दो वक्त, खा-पीकर पेट भरने से आगे नहीं सोच पाते हैं।

इन उपन्यासों में लेखकों ने मछुआरों के विश्वास-मूल्यों को उनके युग-संदर्भों में विन्यस्त ही नहीं किया बल्कि समाज के एक अनछुए पहलू को बड़ी खूबसूरती से प्रस्तुत किया है।

डॉ. एसोशिएट प्रोफेसर
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग,
साहित्य विद्यापीठ,
महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
गाँधी हिल्स, वर्धा-442001 (महा.)
मो.- 9423307797

विशेष अनुरोध

सम्मानित सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, आर.टी.जी.एस / एन.ई.एफ.टी, आदि ई-बैंकिंग माध्यमों से भेजने के पश्चात् एक पोस्ट-कार्ड पर अपना पूरा नाम-पता, पिन कोड नम्बर सहित लिखकर 'अक्षरा' कार्यालय को अवश्य सूचित करें। ताकि पत्रिका प्रेषित करने / मिलने में होने वाली असुविधा से बचा जा सके।

बैंक, खाता संख्या निम्नवत् है-

Ac/ No. 50413818696, IFSC- IDIB000T610

इंडियन बैंक, हिन्दी भवन शाखा, भोपाल

© 2021 JETIR December 2021, Volume 8, Issue 12 www.jetir.org (ISSN-2349-5162)

JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मॉरीशस के हिंदी कथा साहित्य में गांधी

डॉ. उमेश कुमार सिंह, एसोशिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
गांधी हिल्स, वर्धा-442001, [महाराष्ट्र] भारत
ई-मेल: umesh_jnu@rediffmail.com दूरभाष: +919423307797

सारांश: मॉरीशस देश में भारत से उन्नीसवीं शताब्दी में विश्व का सबसे बड़ा विस्थापन हुआ था, जिसमें 4.50 लाख भारतीय लोग अपनी आजीविका की तलाश में मॉरीशस में विस्थापित हुए थे किन्तु भारत से उत्तर भारतीयों का पहला जत्था अनुबंध मजदूर के रूप में 1834 में मॉरीशस आया था जिनमें रामदेव धुरंदर के दादाजी भी आए थे। (संदर्भ: रामदेव धुरंधर साक्षात्कार)। इसके बाद भारत के कई राज्यों से मजदूर लोगों को गन्ने के खेतों में काम करने के लिए गिरमिटिया शर्तबंद मजदूर के अंतर्गत लाया गया था, जिनमें भोजपुरी बोलने वाले मजदूरों की संख्या अधिक थी। इस कारण मॉरीशस पूरी तरह भोजपुरी मय हो गया था। आज मॉरीशस द्वीप को दुनियाँ के पैराडाइज़ के रूप में भी जाना जाता है। इस देश में भारतीय मूल के भारतवंशियों की पाँचवीं और छठी पीढ़ी निवास कर रही है। इस देश के पवासी गिरमिटिया लोग 1968 तक अर्थात स्वतंत्र होने से पूर्व तक भारत का राष्ट्रीय गान □जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता□ बड़े सोहार्द्र और प्रेम के साथ सस्वर गा कर गर्व का अनुभव किया करते थे। आज मॉरीशस को लघु भारत के नाम से भी जाना जाता है भारत के लिए मॉरीशस देश को सामरिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण एवं प्रजातांत्रिक देश कहा जा सकता है। मॉरीशस में 29 अक्तूबर 1901 में मोहनदास करमचंद गांधी डरबन से लौटते समय नौशेरी नामक जहाज से आए थे तथा वे पोर्ट लुईस में बन्दरगाह के निकट 21 दिन तक रुके एवं मॉरीशस के प्रवासी भारतीयों को संबोधित किया था।

प्रमुख शब्द / Key Words: गिरमिटिया Indentured सक्रिय राजनीति Active Politics पैराडाइज़ Paradise गोरे मालिक Gore Boss गिरमिटिया मजदूर Indentured Labour बहु-विधि Multiple Method

शोध प्रविधि / Research Methodology:

मोहनदास करमचंद गांधी जब सन 1924 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के (नेशनल कॉंग्रेस) अध्यक्ष थे, उस समय गांधी जी गिरमिटिया मजदूर कानून के संबंध में मॉरीशस आए थे। किन्तु जब भारत और मॉरीशस में वर्ष 2019 में महात्मा गांधी की 150 वीं जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर विषेश रूप से इस बात का जिक्र किया गया था कि महात्मा गांधी ने 21 दिन का दौरा अक्तूबर 1901 में मॉरीशस में किया था किन्तु मॉरीशस के

© 2021 JETIR December 2021, Volume 8, Issue 12 www.jetir.org (ISSN-2349-5162)

साहित्यकारों की एक अलग ही धारणा है मोहनदास करमचंद गांधी जी जब एस एस नोशेरा नामक पानी के जहाज से इंग्लैंड से अफ्रीका के दौरे पर जा रहे थे। उस दौरे के बीच में वे मॉरीशस में 21 दिन तक रुके थे। इतिहास इसका गवाह है कि गांधीजी ने मॉरीशस में रह रहे भारतवंशियों को संबोधित किया थे उनके अनुसार उन्होने मॉरीशस के भारतीय मजदूर रह-वासियों को कुछ महत्वपूर्ण बातें बतलाई से थीं। **जिनमें प्रथम बात अपने बच्चों को उचित शिक्षा दिलवाना तथा दूसरी बात देश की राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेना। उनकी इन बातों का समावेश अभिमन्यु अनत से अपने उपन्यास □गांधीजी बोले थे□ में किया गया है** किन्तु अभिमन्यु अनत ने अपने □लाल पसीना" उपन्यास की तरह □गांधी जी बोले थे□ उपन्यास की भूमिका में भी इस उपन्यास के इतिहास होने क दावा नहीं किया है किन्तु मॉरीशस में महात्मा गांधी के दौरे की तिथियाँ इतिहास से मेल नहीं खाती हैं।

इस शोध पत्र में अभिमन्यु अनत द्वारा लिखित □गांधी जी बोले थे□ उपन्यास के कथानक और उसके चरित्रों के माध्यम से गांधीजी की मॉरीशस में उपस्थिति तथा उनके विचारों के द्वारा मॉरीशस में आई चेतना के संबंध में विचार किया जा रहा है। इस संदर्भ में यह बताना आवश्यक हो जाता है कि अभिमन्यु अनत को उनके श्रेष्ठ लेखन के कारण मॉरीशस में उन्हें मॉरीशस के प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है अभी हाल ही में पिछले वर्ष उनका सन 2018 में निधन हो गया।

"गांधीजी बोले थे□ उपन्यास मॉरीशस के दिवंगत प्रवासी लेखक अभिमन्यु अनत द्वारा लिखा गया एक विदेशी रचनाकर का हिंदी में लिखित उपन्यास है। इस उपन्यास की कहानी को कुल तीन खंडों में विभक्त किया गया है। प्रथम खंड की कहानी को पृष्ठ 9-102 तक सात उप-भागों में विभक्त किया गया है, दूसरे खंड की कहानी पृष्ठ 105-181 में तथा सात भागों में विभक्त किया गया है और तृतीय खंड की कहानी को पृष्ठ 105-181 में कुल पाँच भागों में विभक्त करके इसकी कहानी को पूर्णता प्रदान की गई है। आज विश्व प्रसिद्ध □लाल पसीना□ और उसकी अगली कड़ी के रूप में □गांधी जी बोले थे□ उपन्यास उनकी बहुत सशक्त रचना कही जा सकती हैं जिस पर हम इस शोध पत्र में विचार कर रहे हैं। गांधी जी के भाषणों से इस द्वीप की जनता में एक नई ज्योति प्रज्ज्वलित ही नहीं हुई अपितु वहाँ के गिरमिटिया भारतीय मजदूरों में एक नवीन ऊर्जा का संचरण भी हुआ।

इस उपन्यास की कथा संक्षेप में कथा के प्रथम भाग में देवराज सामूहिक फांसी से विक्षुब्ध होकर मजदूर रक्षक तथा बस्ती वालों को सूचित कर देता है। इससे वह गोरे मालिक की आँख का काँटा बन जाता है तथा मालिक के भाड़े के लोग देवराज को अकेले में पाकर घेरकर मारने का प्रयत्न करते हैं जिनमें से दो को अकेले ही देवराज जान से मार देता है और मदन के घर में छिप जाता है। इसके बाद सुबह तड़के पुलिस के सिपाही मदन के घर को घेर लेते हैं। देवराज वहाँ से भागने में सफल तो हो जाता है किन्तु पुलिस वाले और उनके कुत्ते उसका पीछा करते हैं, वह बस्ती में वापस लौट आता है और पुलिस की गोली से उसकी मौत हो जाती है। इसके बाद कहानी का सबसे हृदय विदारक दृश्य के रूप में देवराज के शव को कुत्ते नोच- नोच कर खाते हैं। इस दृश्य को देखकर ग्यारह वर्ष का परकाश का बालक घबड़ाने के कारण बीमार पड़ जाता है। बस्ती वाले उसे डॉ साकीर के यहाँ पोर्ट लुईस ले जाते हैं। डॉ साकीर से उन्हें गांधी जी के आगमन की सूचना प्राप्त होती है। दूधवाले चिन्नासामी से बस्ती वालों को सूचना मिलती है कि गांधीजी का स्वागत ताहेर बाग में हुआ है और वे रामपुर जाने वाले हैं। बस्ती के तीस व्यक्ति रामपुर की सभा में जाते हैं जिसमें बालक परकाश भी जाता है। अपने भाषण में गांधीजी लोगों को अपने बच्चों को उचित शिक्षा देने तथा राजनीति में भाग लेने की बात कहते हैं। इस बात को फलीभूत करने के लिए परकाश को प्रेमसिंह के साथ पढने के लिए भेज देता है और प्रेम सिंह बस्ती के बीस बच्चों को स्कूल में प्रवेश दिलवाता है।

दूसरे भाग में परकाश सरकारी स्कूल में अध्यापक बन जाता है किन्तु वह उस नौकरी में चार महीने से अधिक ठहर नहीं पाता है क्योंकि तीन ओर से पहाड़ियों वाले गाँव में एक आदमी का कत्ल कर दिया जाता है। इस मामले में परकाश आगे आकर गन्ने के खेतों में काम करने वाले मजदूरों का एक संघ बनाता है। उसके बाद

© 2021 JETIR December 2021, Volume 8, Issue 12 www.jetir.org (ISSN-2349-5162)

उस पर गहने चोरी करने और हथियार रखने की साजिश का आरोप लगाया जाता है किन्तु बुधन वकील की सहायता से निरपराध सिद्ध होकर छूट जाता है।

तीसरे भाग में परकाश की शादी सीमा से हो जाती है और उसका मजदूर संघ मजबूत होता है। मजदूरों के बीच फूट डालने के उद्देश्य से किराए के आदमी बिना बात के सवाना कोठी में हड़ताल करवा देते हैं। इस कारण श्रमिक संघ लीडर घनेश्वर एवं अन्य मिलकर तीन मजदूरों के सामान को कोठी के घरों से निकालकर बाहर फैंक देते हैं। परकाश वहाँ आकार हड़ताल करवा देता है तथा इसी समय देश में सर कुँवर महाराज सिंह के आगमन की सूचना मिलती है। गोरे मालिकों को दबना पड़ता है। गोरे मालिक परकाश के कामों को नाकाम करने के उद्देश्य से परकाश को ऊंचा पद देकर उसे खरीदना चाहते हैं किन्तु परकास ने कभी बदलना नहीं सीखा है फिर भी गोरे मालिक मजदूरों के वेतन में कुछ वृद्धि कर देते हैं और चारों मजदूरों का सामान उनके घरों में वापस लौटा देते हैं। इसी बीच भूख हड़ताल समाप्त हो जाती है। अंत में परकाश अपने मजदूर संघ को मजदूर दल बना देता है। इस कथानक में मदन, मीरा और सुगूनवा और अनुराधा की प्रेमकथाओं का वर्णन भी हुआ है। इस उपन्यास में सुगूनवा और अनुराधा की प्रेम कथा एक अंतर्कथा भी है। इस उपन्यास का अंत कुँवर महाराज सिंह के भारत लौटने पर होता है।

मॉरीशस के उस दौर में गिरमिटिया मजदूर बहुत गरीबी में अपना जीवन यापन किया करते थे, उसकी झलक गांधीजी बोले थे उपन्यास में इस उदाहरण में देखने को मिलती है जैसे □उसने बगल में तख्ते से टटोलकर टीन के चिराग को अपने पास किया। बिस्तर के नीचे से चकमक को बाहर निकाला। अग्नि पत्थर को लोहे के टुकड़े से रगड़कर सन के सूखे हुये गूदे पर चिंगारियाँ पैदा कीं और फिर उन्हें फूककर चिराग जलाया।□ 1 पृष्ठ 79 उनकी आर्थिक स्थिति में विस्थापन के बावजूद विशेष अंतर नहीं पड़ा था।

इस देश में इसी प्रकार गोरे मालिकों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का बहु-विधि प्रकार से शोषण किया जाता रहा है □दो कुत्तों ने उस दिन दोनों के कपड़ों को तार-तार करके उन्हें लहूलुहान कर दिया। सीता के आँचल में सिमटा हुआ परकाश उन खूंख्वार कुत्तों को देखना नहीं चाह रहा था□।2 □जब तीन खूंखवार कुत्ते उस पर झपट पड़े। तीन कुत्तों ने उसे दबोचकर नोचना शुरू कर दिया। □ इस हादसे के बाद परकास बहुत बीमार पड़ जाता है। □3 पृष्ठ 19 □डॉ साकीर जुम्मे के दिन 12 बजे के बाद सभी का मुफ्त इलाज करता है 4 □भारतीय मजदूरों के साथ पशुवत व्यवहार किया जाता था तथा विद्रोह करने पर उन पर भारी जुल्म किए जाते थे जैसे- □अब तो कोठीवालों को जिन मजदूरों में विद्रोह की चिनगारी नजर आ जाती है उन्हें चुपके से पेड़ों पर झुला दिया जाता है, ताकि कल कोई भी आवाज उठानेवाला न रहे। जिंदगी सिर्फ उन्हीं को बक्शी जाएगी जो जुल्मों को चुपचाप सहने को तैयार होंगे।□5 पृष्ठ 12 भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण की बात लाल पसीना, गांधी जी बोले थे, और पसीना बहता रहा आदि सभी उपन्यासों में व्यक्त की गई है। गांधीजी बोले थे उपन्यास में गांधी जी के विचारों का असर लोगों पर होता है।

लाल पसीना उपन्यास में सभी जहाजिया भाई हुआ करते थे, उसमें जाति और धर्म किसी प्रकार से मानवता और मानवीय सम्बन्धों के मध्य में नहीं आते थे। इस उपन्यास में बांटते हुये दिखलाई पड़ते हैं जैसे- □कल तक हम एक सभा में बैठने वाली, एक मंदिर में जाने वाली एक जाति के थे। आज हमें चार जातियों में बांटा जा रहा है। इससे पहले हिन्दू और मुसलमान तक में कोई अंतर नहीं था। सब मजदूर थे। एक दूसरे के सुख-दुख में हिस्सेदार थे। अब तो अलग-अलग बंटे जा रहे हैं। ... ब्राह्मण अपना कुनबा बनाकर बैठा है। ठाकुर अपना। वैश अपना, चमार अपना, दुसाध अपना और अब तो मराठी, तेलगू, तमिल भी अपने अलग-अलग कुनबे बनाने लगे हैं। अब न मजदूरों की एक जाति रही और न भारतीयों की।□6 पृष्ठ 131, भारतीय गिरमिटिया मजदूरों में विभाजन के स्थान पर एकता स्थापित करने के लिए गांधीजी के विचार प्रेरणा का आधार प्रतिविम्बित एवं परिलक्षित होते दिखलाई पड़ते हैं।

अभिमन्यु अनत ने अपने "लाल पसीना" उपन्यास की तरह "गांधी जी बोले थे" उपन्यास में भी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण को बखूबी व्यक्त किया है किन्तु मॉरीशस में ठहरकर इस शोषण से मुक्ति के लिए गांधी जी ने क्या संदेश दिया और उसकी प्रतिक्रिया में इस द्वीप के लोगों के क्या किया यही गांधी जी बोले थे उपन्यास की उर्वर जमीन कही जा सकती है।

लाल पसीना उपन्यास की कहानी उनके अपनों के द्वारा सुनाया गया यथार्थवादी चित्रण होने से इनकार नहीं किया जा सकता है और "गांधी जी बोले थे" की कहानी लाल पसीना उपन्यास के युवा हो रहे चरित्रों के माध्यम से गढ़ी गई हैं। लाल पसीना के जीवित बचे हुये पात्र "गांधीजी बोले" उपन्यास के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। किसन सिंह का पुत्र मदन, दाऊद और ज़ीनत और उनका पुत्र फरीद, मीरा, विवेक की पत्नी सीता और देवराज जो उपन्यास के प्रारम्भ में ही पुलिस द्वारा मार दिया जाता है आदि सभी लाल पसीना के पात्र हैं। इसमें जो पात्र युवावस्था में थे वे सभी गांधी जी बोले थे उपन्यास में अधिक अनुभवी, प्रौढ़ व्यक्तियों के रूप में उपस्थित होते हैं। लाल पसीना का मदन नेत्रहीन होने के स्थान पर इसमें विकलांग होता है तथा वह दृढ़प्रतिज्ञ और कर्तव्यनिष्ठ दिखलाई पड़ता है।

इतिहास के प्रसिद्ध नाम और उनके कार्य कलापों आदि को भी इस उपन्यास में सम्मिलित किया गया है युवक मोहन दास करमचंद गांधी (बाद में गांधी), डॉक्टर साकिर, मणिलाल डॉक्टर, वकील बुधन, काशीनाथ क्रस्तू और कुँवर महाराज सिंह आदि। इतना ही नहीं इस उपन्यास की कई घटनाएँ ऐतिहासिक ठहरती हैं। इस प्रकार गांधी जी बोले थे उपन्यास गांधीजी के विचारों के प्रभाव गिरमिटिया भारतीय कुलियों पर परिलक्षित ही नहीं होता है बल्कि इस उपन्यास को ऐतिहासिक उपन्यासों की श्रेणी में रखना किसी प्रकार अनुचित नहीं कहा जा सकता है।

इस उपन्यास में बस्ती के निवासियों के सुख-दुख, आशा-निराशा, संयोग वियोग के बीच सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक उन्नति अवनति के साथ गोरे मालिकों की यातना और शोषण के विरोध में उत्साह के साथ संघर्ष करते रहने और उद्धार के प्रगति पथ पर निरंतर अग्रसर होने की कहानी कही जा सकती है। गांधी जी बोले थे उपन्यास की कथा के लिए सबसे बड़ी घटना मोहनदास करमचंद गांधी के मॉरीशस आने को माना जा सकता है। गांधीजी के विचारों की ऊर्जा मदन और उनके साथियों के लिए आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होती है तथा इसके फलस्वरूप ही परकाश शिक्षा प्राप्त करके अध्यापक बन जाता है और बाद में मजदूरों का नेता बन जाता है। बस्ती में स्कूल खोलने की व्यवस्था गांधी के संदेश सुनने के बाद होता है। मनीलाल डॉक्टर भी गांधी जी के द्वारा ही भेजे जाते हैं। अंत में कुँवर महाराज सिंह का आगमन बहुत उत्तम हुआ है। इस उपन्यास का अंत कुँवर महाराज सिंह के भारत लौटने के साथ होता है। उपन्यास लिखने के पीछे उद्देश्य यह बताना है कि मॉरीशस के भारत वंशियोंशियों की उन्नति के पीछे भारत के महापुरुषों का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

निष्कर्ष:- "गांधीजी बोले थे" उपन्यास पूरी तरह से गांधी विचार और भारतीयता का चित्र प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास का नायक संघर्ष का प्रतीक बनाकर गांधी विचारधारा को आत्मसात करता है। आज से लगभग सत्तर से अस्सी वर्ष पहले मॉरीशसीय समाज में भारतीयों की जो स्थिति थी, उसमें भयंकर गरीबी और गोरों के बीच मध्यस्तता करने वाले सरदार और गोरे सताधीशों से उनका दोहरा संघर्ष था। यहाँ उसे समग्रता में महसूस किया जा सकता है। मदन, परकाश, सीता, मीरा आदि इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं किन्तु उनके विचार, संकल्प, श्रम, त्याग और प्रेम संबंध उच्च मानवीय आदर्शों की स्थापना करते हैं और जो किसी भी संकरमणशील जाति के प्रेरणाश्रोत हो सकते हैं। गांधी विचार के मूल आधार स्तम्भ सत्य और अहिंसा, सर्वोदय सत्याग्रह एवं

रामराज्य तीन आदर्श थे। इस आदर्शों की स्थापना अभिमन्यु अनत ने अपनी कृति गांधी जी बोले थे में पूरी तरह से की है।

संदर्भ:

1. अभिमन्यु अनत, गांधी जी बोले थे, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण वर्ष 1984
2. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02 पृष्ठ 79(1)
3. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02, पृष्ठ 19 (2)
4. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02, पृष्ठ 23 (3)
5. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02, पृष्ठ 39 (4)
6. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02, पृष्ठ 12 (5)
7. अभिमन्यु अनत, गांधीजी बोले थे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-02, पृष्ठ 131 (6)
8. अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण वर्ष 1984
9. अभिमन्यु अनत, हम प्रवासी, प्रभात प्रकाशन, 2/11, आसफ आली रोड, न्यू दिल्ली 110002 प्रथन संस्करण वर्ष 2004
10. अभिमन्यु अनत, और पसीना बहता रहा, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण वर्ष 2008
11. प्रहलाद रामशरण, रंसगरन मॉरीशस भारतीय संस्कृति का हरावल दस्ता,
12. पं. आत्माराम विश्वनाथ, मॉरीशस का इतिहास, सं प्रह्लाद रामशरण, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 प्रथम संस्करण वर्ष-1923, द्वातीय वर्ष-1998
13. डॉ. उदय नारायण गंगू, मॉरीशस की संस्कृति और साहित्य, यश पब्लिकेशन्स, 1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032, वर्ष 2017
14. डॉ मुनीशवरलाल चिंतामणि, मॉरीशसीय हिन्दी साहित्य, एक परिचय, हिन्दी बूक सेंटर, 4/5-बी, नई दिल्ली-110002, संस्करण वर्ष-2001
15. डॉ. इन्द्रदेव भोला, इन्द्रनाथ, मॉरीशस हिन्दी लेखक संघ का इतिहास(1961-2017) स्टार पब्लिकेशन, प्रा. लि.4/5-बी, आसफअली रोड, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण वर्ष 2017

PDF Created Using

Camera Scanner

Easily Scan documents & Generate PDF

https://play.google.com/store/apps/details?id=photo.pdf.maker